RAJYA SABHA

Friday, the 24th July, 1998/ 2 Shravan, 1920 (Saka)

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman *in the Chair.*

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

खुजराहो पहुंचने के लिए रेल सुविधा

*541. **श्री राधाकिशन मालवीय:†**
श्रीमती वीणा वर्मा:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या खजुराहो पहुंचने के लिए रेल सुविधा उपलब्ध नहीं है जो सांची के साथ-साथ विश्व संपदा का एक भाग है और दोनों ही स्थानों पर प्रति वर्ष लाखों भारतीय तथा विदेशी पर्यटक आते हैं और उनको रेल सुविधा के अभाव में काफी असुविधा का सामना करना पड़ता है; और

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार खजुराहो पहुंचने के लिए रेल सुविधा उपलब्ध कराने का विचार रखती है?

रेल मंत्री (श्री नीतीश कुमार): (क) जी हां।

(ख) जी हां। खजुराहो से महोबा तक शाखा लाइन सहित ललितपुर से सतना और रीवा से सिंगरौली तक एक नई बड़ी लाइन (541 किलो मीटर) का निर्माण कार्य 975 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से 1997-98 के बजट में पहले ही शामिल किया जा चुका है। अभी अपेक्षित स्वीकृतियां मिलनी बाकी हैं।

श्री राधाकिशन मालवीय: सभापति जी, माननीय मंत्री महोदय ने जवाब दिया कि इसे बजट में सम्मिलित कर लिया गया है और इस नई रेलवे लाइन का प्रपोज़ल हमने प्लानिंग कमीशन के पास एप्रूवल के लिए भेजा है व इसकी अपेक्षित स्वीकृतियां मिलनी बाकी हैं। सभापति महोदय, खजुराहो मंदिर विश्व का प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ काम-क्रीडा, रति-क्रिया की विभिन्न मुद्राओं का खुला चित्रण आज भी बना हुआ है। खजुराहो के मंदिर तत्कालीन चन्देल शासकों की कला-प्रियता और उनकी धार्मिक व सामाजिक उदारता का कालजयी स्मारक हैं। 900 ईस्वी से 1500 ईस्वी तक चन्देल शासकों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनका निर्माण होता रहा। खजुराहो उस समय चन्देलों की राजधानी हुआ करती थी। बाद में बुन्देलों के शासनकाल में यह बुन्देलखंड कहलाने लगी। खजुराहो के मंदिर, बुन्देल शासकों का सूर्य अस्त होने के बाद वर्षों तक गुमनामी के अंधेरे में रहे। बाद में एक अंग्रेज इंजीनियर, श्री डी०एस० बाथ उनका नाम था, उन्होंने इसकी खोज की और फिर से इसे प्रतिष्ठा दिलाई।

सभापति जी, खजुराहो में पहले 85 मंदिर थे, लेकिन इस समय सिर्फ 25 मंदिर ही वहां पर सुरक्षित हैं। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो के मंदिर में स्थापित अराध्य देवी-देवताओं की मूर्तियों के अलावा मंदिर के बाहर दीवारों पर उकेरी गई रति-क्रिया की तीन मूर्तियों के लिए यह मंदिर बहुत ज्यादा विश्व प्रसिद्ध है। हर पर्यटक यहां से यह सवाल लेकर लौटता है कि पश्चिम की सभ्यता से उस समय पूरी तरह अप्रभावित होकर उस जमाने में मंदिरों में ऐसी मूर्तियां स्थापित करने के पीछे क्या उद्देश्य रहा होगा? कुछ विद्वानों का मानना है कि यौन क्रिया को जीवन का अभिन्न अंग मानकर इन दृश्यों को खजुराहों के मंदिर में स्थापित किया गया है। कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि यौन क्रिया के सजीव दृश्य सामने होने पर भी उसकी पूरी तरह से उपेक्षा कर...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: The history is not required. Please put a specific question.

श्री राधा किशन मालवीय: मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि खजुराहो का मंदिर विश्व प्रसिद्ध है और यहां पर लाखों पर्यटक जाते हैं लेकिन रेल की सुविधा अभी तक वहां उपलब्ध नहीं है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि प्लानिंग कमीशन के पास कंसीडरेशन के लिए जो उन्होंने प्रपोज़ल भेजा है, उसको कब तक स्वीकृति मिलेगी और उसका निर्माण कार्य वे कब शुरू करवा देंगे?

श्री नीतीश कुमार: सभापति महोदय, खजुराहो को रेल से जोड़ना चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती है और खजुराहो के ऐतिहासिक महत्व को हर कोई स्वीकार करेगा। जैसा मैंने प्रश्न के उत्तर में बताया है, यह 541 किलोमीटर लंबी रेल लाइन की योजना है और जब इस योजना का प्राकलन तैयार किया गया था, तब इसके निर्माण के लिए 975 करोड़ रुपए की राशि आंकी गई थी। इसके निर्माण के लिए एक बहुत बड़ी परियोजना है और इसके लिए धन की भी आवश्यकता होगी। बजट में इसका उल्लेख जरूर किया गया है लेकिन इसकी अपेक्षित मंजूरी अभी तक नहीं मिल पाई

है, यानी कैबिनेट की मंजूरी भी अभी तक नहीं मिल पाई है। पिछले साल इसको रखा गया था बजट में। हम अपनी तरफ से पूरा प्रयास करेंगे और इसके क्लियरेंस के लिए जो रेल मंत्रालय को पहल करनी है, हम उस दिशा में पहल करेंगे।

श्री राधा किशन मालवीय: सभापति महोदय, रेलवे बोर्ड लाभ और हानि को देखकर नयी रेल लाइन का निर्माण करता है। जब यह रेल लाइन इतनी महत्वपूर्ण है, जहां लाखों लोग प्रतिवर्ष जाते हैं तो क्या माननीय रेल मंत्री जी को पहले इसका ध्यान नहीं आया? जहां तक मैं समझ पाया हूं, रेलवे विभाग के ऑफिसर्स या तो रेल मंत्री जी के इशारे पर काम करते हैं या रेल मंत्री जी अपनी क्षेत्रीय भावनाओं को लेकर रेल विभाग में काम करते हैं। मेरा माननीय मंत्री जी से एक ही अनुरोध है कि इस वर्ष खजुराहो के मंदिर को एक हजार साल पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर भारत सरकार और मध्य प्रदेश सरकार ने मिलकर सहस्राब्द का आयोजन किया है। तो क्या इस साल आप इस प्रोजेक्ट को स्वीकृति दिलाकर इसका निर्माण अति शीघ्र आरंभ करवाऐंगे?

सभा में यह प्रश्न वास्तव में श्री राधाकिशन मालवीय द्वारा पूछा गया।

श्री नीतीश कुमार: सभापति महोदय, इस प्रश्न का मैंने उत्तर दे दिया है। मैं पहले भी बता चुका हूं कि इस प्रकार के कुल 19,000 करोड़ रुपए से ज्यादा के प्रोजेक्ट्स पैंडिंग है नयी रेल लाइनों के लिए। जब बजट आपके पास चर्चा के लिए आता है तो उसमें नयी रेल लाइनों के लिए केवल 400 से 500 करोड़ रुपए की व्यवस्था हो पाती है। इसलिए मैं इन पैंडिंग प्रोजेक्ट्स पर एक व्हाईट पेपर, एक श्वेतपत्र संसद के दोनों सदनों में अगले सप्ताह रखने जा रहा हूं ताकि हर व्यक्ति पूरी स्थिति को जान ले। बजट में तो इसका उल्लेख कर दिया गया है लेकिन बजट के पहले जो प्लानिंग कमीशन की एक्सपैंडेड बोर्ड की और कैबिनेट की मंजूरी ली जानी चाहिए, वह नहीं ली गई और बजट में सीधे उसका समावेश कर दिया गया। लेकिन बगैर उस रिक्विज़िट क्लियरेंस के काम शुरू करना नामुमकिन है। एक बार वह लौट चुका है, फिर हम नये सिरे से उसके लिए पहल करेंगे, यह आश्वासन मैं पहले ही दे चुका हूं। मैं उस दिशा में प्रयासरत हूं।

श्रीमती वीणा वर्मा: सभापति जी, मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहती हूं कि हम आजादी की स्वर्ण-जयंती मना रहे हैं और खजुराहो के मंदिरों की एक हजारवीं जयंती मनाने जा रहे हैं। इसका मतलब यह है कि इन सालों में हजारों पर्यटक लाखों रुपया खर्च करके वहां गए होंगे और रिसर्च, पुरातत्व संपदा का रख-रखाव, सांस्कृतिक विरासत की हिफाज़त, इस पर भी हमने बहुत कुछ खर्च किया होगा लेकिन ऐसी जगह पर कोई रेल सुविधा न होना बड़े अफसोस की बात है। क्या इसका दोष यह कहिए कि रेल मंत्रालय को नहीं जाना चाहिए? अब आप खजुराहो की एक हजारवीं जयंती मनाने के उपलक्ष्य में व आजादी का स्वर्ण जयंती वर्ष हम मना रहे हैं तो उसमें क्या एक ऐसी घोषणा करेंगे कि आप पैलेस ऑन व्हील जिस तरह से राजस्थान में चलती है वैसे ही मध्य प्रदेश में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत व पुरातत्व के जो मंदिर है या दर्शनीय स्थल हैं उनके लिए भी पैलेस ऑन व्हील जैसा चलाने की कोई घोषणा करेंगे या कोई आश्वासन देंगे? सभापति महोदय, मेरा "बी" पार्ट है, जो कहा गया है कि 511 किलोमीटर लाईन के निर्माण का जो प्रस्ताव है और उसमें 975 करोड़ रुपए खर्च हो जाएंगे तो यह कोई टाईम फ्रेम योजना, स्वीकृति तो आएगी ही लेकिन उसके बाद आवश्यक है कि टाईम फ्रेम योजना बने जिससे कि उसकी कॉस्ट आगे न बढ़े। अभी तो 975 करोड़ है। क्या मंत्री जी, ऐसा भी कोई आश्वासन देंगे?

श्री सभापति: बस हो गया, आपका सवाल हो गया।

श्री नीतीश कुमार: सभापति महोदय, बार-बार एक ही सवाल किया जा रहा है जिसको हम स्वयं बता चुके हैं स्टेटस पेपर के जरिए, अभी व्हाईट पेपर के जरिए बताएंगे। यह सब के सोचने का विषय है, 975 करोड़ रुपए की योजना और पूरे देश के लिए एक साल में 400 से 500 करोड़ रुपए का प्रबंध वैसी स्थिति में कितने साल में बनेगा। आप तीन दिन का इंतजार करें, हम सारे प्रोजक्शन के साथ व्हाईट पेपर सदन में रखने वाले हैं, एक-एक परियोजना की स्थिति भी रखने वाले हैं। दूसरी बात, क्या पहले रेल मंत्रालय को यह बात समझ में नहीं आई, यह मुझसे पूछ रहे हैं यह सवाल अपने आपसे पूछना चाहिए, हम तो चार महीने से हैं और 45 साल, 47 साल आप बैठे हुए थे, आपको सोचना चाहिए था इसके लिए कि आपने क्या किया।

श्री सुरेश पचौरी: सभापति जी, यह कोई एक्सक्यूज नहीं है। सवाल यह है कि आप क्या करने जा रहे हैं। ....(व्यवधान) यह पुरानी बातें क्यों कर रहे हैं। यह

कोई उत्तर नहीं है। ....(**व्यवधान**) आप क्या करने जा रहे हैं ....(**व्यवधान**)

श्री सभापति: श्री राघवजी,

श्री नीतीश कुमार: यह सच्चाई है सभापति महोदय, मेरी बात सुनी नहीं, मैंने कहा कि हम पहल करने जा रहे हैं। ....(**व्यवधान**)

श्री सभापति: आप बैठ जाइए, बहुत हो गया .... (**व्यवधान**)

श्री नीतीश कुमार: मैं तो कह रहा हूं कि पहल करने जा रहा हूं। लेकिन आपको जवाब देना होगा कि आपने अब तक क्या किया?

श्रीमती वीणा वर्मा: मुझे एक छोटा सा और ....(**व्यवधान**)

श्री सभापति: नहीं-नहीं हो गया।

श्री राघवजी: सभापति जी, भारतवर्ष का अगर रेल का नक्शा देखा जाए तो उसमें मध्य प्रदेश ही ऐसा राज्य दिखेगा जिसमें सबसे कम रेल लाईनों का जाल है। अगर प्रति सौ किलोमीटर से रेल लाईन सबसे कम किसी प्रदेश में है तो वह मध्य प्रदेश है और इस नाते से उसको प्राथमिकता मिलनी चाहिए। माननीय मंत्री का मैं आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने आश्वासन दिया है लेकिन मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन जरूर करना चाहूंगा कि वह अपनी इच्छा शक्ति जरा तेज कर दें इस लाईन के बारे में। इस प्रश्न में खजुराहो के साथ सांची का भी जिक्र आया है और इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि सांची में प्रति वर्ष लाखों पर्यटक विदेशों से आते हैं। एकमात्र प्रतिष्ठित ट्रेन जो सांची से होकर गुजरती है वह शताब्दी एक्सप्रेस है। तो क्या माननीय मंत्री जी, शताब्दी एक्सप्रेस को वहां पर रोकने का स्टॉपेज स्वीकार करेंगे विदेशियों की संख्या को देखते हुए?

श्री नीतीश कुमार: जहां किसी ट्रेन को रोकने का या इससे पहले भी श्रीमती वीणा वर्मा जी ने सवाल किया, यह दोनों इस प्रश्न से उत्पन्न नहीं होते हैं और जहां तक सवाल है मध्य प्रदेश की उपेक्षा का, तो इस साल के बजट में मध्य प्रदेश राज्य के लिए नई लाईन, गेज कन्वर्जन, डबलिंग और इलेक्ट्रिफिकेशन को ले लिया जाए तो जहां पिछले वर्ष 1997-98 का आउटले था 67 करोड़ रुपए का, इस साल का आउटले है 140 करोड़ 84 लाख का।

श्री संतोष बागरोदिया: सभापति महोदय, अगर हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा फॉरेन टूरिस्ट जाते हैं तो राजस्थान में जाते हैं। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि राजस्थान में कोई नया सर्वे कर रहे हैं?

श्री सभापति: नहीं, This supplementary does not arise out of this question.

श्री संतोष बागरोदिया: सर, फॉरेन टूरिस्ट हैं।

श्री सभापति: नहीं, यह खजुराहो का सवाल है।

श्री संतोष बागरोदिया: सर, ये फॉरेन टूरिस्ट हैं, इसमें लिखा हुआ है। Both the places are visited by lakhs of Indian and foreign tourists."

क्वेश्चन को आप देखिए सर। अगर मैं गलत हूं तो मैं नहीं बोलूंगा।

श्री सभापति: नहीं, नहीं ...(*Interruptions*)

SHRI SANTOSH BAGRODIA: In the question itself it is there that Khajuraho along with Sanchi is a part of world heritage...

MR. CHAIRMAN: No. Mr. Ramachandra Reddy ... (*Interruptions*)

श्री संतोष बागरोदिया: ठीक है, सर, मैं खजुराहो पर ही आ जाता हूं।

श्री सभापति: ठीक है, आप खजुराहो पर बोलिए।

श्री संतोष बागरोदिया: जब आपने मौका दिया है तो...बड़ी मुश्कल से तो आप लेफ्ट साइड में देखते है सर।

श्री सभापति: खजुराहो पर बोलिए।

श्री संतोष बागरोदिया: अगर मध्य प्रदेश की बात करनी है जैसा हमारे अन्य साथियों ने कहा है कि विश्रामपुर और अम्बिकापुर, ये नई रेल लाईन जो बनने वाली थी, इसका काम तो एप्रूव हो गया लेकिन यह काम पूरी तरह से नहीं चल रहा है, इसके लिए आप क्या कर रहे हैं?

श्री नीतीश कुमार: सर, विश्रामपुर, और अम्बिकापुर लाईन के लिए सवाल नहीं है लेकिन मैं उनको उत्तर दे देना चाहता हूं। विश्रामपुर और अम्बिकापुर बजट में शामिल है। क्लीयरेंस से अपेक्षित मंजूरी इसको नहीं मिली है। एक बार यह अस्वीकृत हो चुका है। इसके

लिए मैंने नए सिरे से पुनः योजना आयोग से अनुरोध किया है कि इस पर पुनर्विचार करके इस पर कनकरेंस दें।

MR. CHAIRMAN: Shri Solipeta Ramachandra Reddy. You put a question on Khajuraho only and nothing else.

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: Sir, there are several important tourist places like Khajuraho...

MR. CHAIRMAN: No, no. ...(*Interruptions*) Dr. Raja Ramanna.

DR. RAJA RAMANNA: Sir, there are so many important artistic places which have been made pilgrimage centres. I would like to suggest that railway stations should not be located anywhere near these wonderful artistic places because people come in large numbers and spoil the whole area. But Madhya Pradesh can have any number of trains. I have got nothing to say on that matter. But I know that Sanchi is going to be spoiled. Badrinath has been spoilt. Though trains do not go there, buses go there. And the bridge across the river Ganga has spoilt the Gangotri. You make it too easy for pilgrims to go there in large numbers. They spoil the whole place. This should be borne in mind when the Minister takes a decision to put a train to a historical place like Khajuraho.

श्री नीतीश कुमार: वैज्ञानिक हैं और आणविक विस्फोट की तरफ जा रहे हैं और दूसरी तरफ यह सवाल उन्होंने उठाया है, उनके व्यक्तिव के दो हिस्से हैं, यह जानकार मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

श्री बालकवि बैरागी: सर मेरा एक छोटा सा सुवाल है। मैं माननीय रेल मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं और वे उत्तर तो दे ही देंगे कि व्हाईट पेपर में वे क्या मेंशन करेंगे, मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे चिर कुमार प्रधान मंत्री को लेकर आप जाइए, खजुराहो के मंदिर उनको दिखाइए और वहां शिलान्यास करके आइए नई रेल लाईन का। यह आप कब कर रहे हैं, यह बताइए।

श्री नीतीश कुमार: जब तक प्रोजेक्ट का अपेक्षित मंजूरी नहीं मिल जाती है तब तक शिलान्यास करने में मेरा विश्वास नहीं है।

निजी तथा सरकारी उपक्रमों में उर्वरकों का उत्पादन

*542. **श्री चीमनभाई हरीभाई शुक्ला:**
श्री गोविन्दराम मिरी†:

क्या रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान देश में निजी तथा सरकारी उपक्रमों में उर्वरकों के उत्पादन के संबंध में बहुत कम प्रगति हुई है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या सरकार ने इस संबंध में स्थिति का मूल्यांकन किया है; और यदि हां, तो उसके या निष्कर्ष निकले; और

(घ) क्या सरकार ने संसदीय स्थायी समिति द्वारा लिये गये सुझावों के संबंध में कोई अध्ययन किया है ताकि उत्पादन की स्थिति में सुधार लाया जा सके?

रसायन और उर्वरक मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (घ) एक विवरण पत्र सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) और (ख) आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान, उर्वरक पोषकों के उत्पादन में 13.2% वृद्धि हुई।

आठवीं योजना के लिए योजना अवधि शुरू होने से पूर्व निर्धारित किए गए उत्पादन लक्ष्यों को मुख्यतः नीति ढांचे के बारे में अनिश्चिताओं के सन्दर्भ में क्षमता निर्माण में कमी, आठवीं योजना के प्रारम्भिक वर्ष में फोस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों को नियंत्रणमुक्त कर दिये जाने से मांग अवरूद्धता, आवर्तक फीडस्टॉक और इन्फ्रास्ट्रक्चर बाधाओं तथा रुग्ण उर्वरक उपक्रमों की कठिनाइयों के कारण प्राप्त नहीं किया जा सका।

(ग) उच्चाधिकार प्राप्त उर्वरक मूल्य निर्धारण नीति पुनरीक्षा समिति (एचपीसी) ने उर्वरक उद्योग के विकास के लिए उपयुक्त नीति ढांचे के संबंध में सिफारिशें की हैं। एचपीसी की रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों के संबंध में अर्न्तमंत्रालीय परामर्श तथा उद्योग के साथ बातचीत शुरू की गई है। इस कार्य के पूर्ण होने के पश्चात् नई उर्वरक नीति की घोषणा की जायेगी।